DAILY NEWS BULLETIN

LEADING HEALTH, POPULATION AND FAMILY WELFARE STORIES OF THE DAY

Monday 20210531

कोरोना

50 दिन के निचले स्तर पर कोरोना के नए केस, एक्टिव मामलों की संख्या में भी आई तेजी से गिरावट (Hindustan: 20210531)

https://www.livehindustan.com/national/story-coronavirus-new-cases-at-50-days-low-active-cases-also-goes-down-to-20-lakhs-in-india-4078061.html

देश को कोरोना की दूसरी लहर से लगातार राहत मिल रही है। सोमवार को एक दिन में कुल नए केसों का आंकड़ा 1.52 लाख दर्ज किया गया है, जो बीते 50 दिनों में सबसे कम है। पिछले 20 दिनों से लगातार कोरोना के नए केसों में गिरावट का दौर देखने को मिल रहा है। इससे दूसरी लहर पर काबू पाने की उम्मीदें बढ़ी हैं। नए केसों में कमी और रिकवरी ज्यादा होने के चलते एक्टिव केसों की संख्या में भी तेजी से कमी आई है। फिलहाल भारत में कोरोना के कुल एक्टिव केस 20,26,092 हैं। बीते एक दिन में ही एक्टिव केसों की संख्या में 88,416 की कमी आई है।

पिछले एक दिन में देश भर में कोरोना से 2,38,022 मरीज रिकवर हुए हैं। इसके साथ ही देश में कोरोना को मात देने वालों का आंकड़ा बढ़कर 2,56,92,342 हो गया है। ऐसा लगातार 18वें दिन हुआ है, जब रिकवर होने वाले लोगों की संख्या नए केसों के मुकाबले ज्यादा है। भारत में कोरोना का रिकवरी रेट बढ़कर 91.60 फीसदी हो गया है। वहीं साप्ताहिक पॉजिटिविटी रेट भी 9.04% रह गया है। अब डेली पॉजिटिविटी रेट की बात करें तो यह 9.07 पर्सेंट ही रह गया है। बीते एक सप्ताह से लगातार यह आंकड़ा 10 फीसदी से कम पर बना हुआ है।

देश में कोरोना को मात देने की उम्मीदें इसलिए बढ़ी हैं क्योंकि एक तरफ टेस्टिंग और दूसरी तरफ वैक्सीनेशन का अभियान तेज हुए हैं। अब तक देश में 34.48 करोड़ टेस्ट हो चुके हैं। इसके अलावा वैक्सीनेशन की बात करें तो कुल 21.3 करोड़ डोज अब तक दी जा चुकी हैं। आने वाले कुछ दिनों में टीकाकरण के अभियान में तेजी आने की बात कही जा रही है। ऐसे में कोरोना को मात देने की उम्मीदें भी बढ़ जाएंगी। बता दें कि देश में अब तक दो वैक्सीन ही लगाई जा रही थीं, कोविशील्ड और कोवैक्सिन। लेकिन अब स्पूतनिक वी का टीका भी लगना शुरू हो गया है।

Smoking (Hindustan: 20210531)

https://epaper.livehindustan.com/imageview_839848_111438628_4_1_31-05-2021_2_i_1_sf.html

कोरोना में श्वसन तंत्र प्रभावित होता है, धूम्रपान करने वालों को पहले से सांस संबंधी परेशानी होने से बढ़ जाता है खतरा

धूम्रपान करने वालों में कोरोना से मौत का खतरा 50% अधिक

नई दिल्ली | एजेंसी

अगर आप धूम्रपान करते हैं तो सावधान हो जाइए। विश्व स्वास्थ्य संगठन की मानें तो धूम्रपान करके अपने फेफड़ों को नुकसान पहुंचाने वाले लोगों में कोविड की गंभीरता और इससे मौत का जोखिम 50 फीसदी ज्यादा होता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक डॉ. टेड्रोस अधनोम घेब्रेयेसस ने 28 मई को जारी बयान में कहा कि धूम्रपान करने वालों में कोरोना की गंभीरता और मौत होने का जोखिम 50 प्रतिशत तक ज्यादा होता है, इसलिए कोरोना वायरस के जोखिम को कम करने के लिए धूम्रपान छोड़ देने में ही भलाई है।

धूम्रपान की वजह से कैंसर, दिल की बीमारी और सांस की बीमारियों का जोखिम भी बढ़ जाता है। इस संबंध में नारायणा अस्पताल गुरुग्राम में कंसल्टेंट एंड सर्जन, हेड एंड नेक ऑन्कोलॉजी, डॉक्टर शिल्पी शर्मा बताती हैं कि आज के दौर में जो लोग धूम्रपान करते हैं उन्हें कोविड महामारी को इस लत को छोड़ने के एक और कारण के रूप में देखना चाहिए।

तंबाकू छोड़ने का आग्रह

नई दिल्ली (का.सं)। राजीव गांधी कैंसर संस्थान और अनुसंधान केंद्र ने लोगों के लिए जागरूकता अभियान की शुरुआत की है। आरजीसीआईआरसी के सर्जिकल ऑकोलॉजी विभाग के निदेशक डॉ. एके. दीवान ने कहा कि कोरोना मुख्य तौर पर श्वसन तंत्र से जुड़ी बीमारी है। धूम्रपान से फेफड़े और श्वसन तंत्र पहले से ही प्रभावित होते हैं। ऐसे में कोविड-19 का संक्रमण और घातक हो जाता है।

दिल का दुश्मन

- कैंसर, दिल की बीमारी व सांस की बीमारियों का जोखिम अधिक
- दिल की बीमारियों से होने वाली कुल मौतों में से 20 प्रतिशत तंबाकू के कारण होती हैं

कोरोना संक्रमण को घातक बना रहा तंबाकू और धूम्रपान का साथ (Dainik Jagran: 20210531)

https://www.jagran.com/uttar-pradesh/lucknow-city-world-no-tobacco-day-2021-smoking-and-tobacco-use-play-an-important-role-in-the-spread-of-corona-infection-jagran-special-21693821.html

ग्लोबल एडल्ट टोबैको सर्वे के अनुसार भारत में तंबाकू सेवन प्रारंभ करने की औसत आयु 18.7 वर्ष है।

लखनऊ केजीएमयू के रेस्पिरेटरी मेडिसिन विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. सूर्यकान्त त्रिपाठी ने बताया कि धूम्रपान और तंबाकू का सेवन एक साथ कई बीमारियों को दावत देता है। ये न केवल इसके शौकीनों की सेहत खराब करते हैं बल्कि आसपास के लोग भी इससे प्रभावित होते हैं।

लखनऊ, जेएनएन। कोरोना संक्रमण के प्रसार में धूम्रपान और तंबाकू के सेवन की अहम भूमिका है और ऐसे लोगों के कोरोना संक्रमित होने पर अन्य की अपेक्षा जोखिम भी बढ़ जाता है। नरल एग्रीमेंट ऑन ट्रेड इन सर्विसेज के अनुसार भारत में लगभग 27 करोड़ लोग तंबाकू का सेवन करते हैं। भारत में तंबाकू के कारण प्रतिवर्ष लगभग 12 लाख लोगों की मृत्यु होती है। ग्लोबल एडल्ट टोबैको सर्वे के अनुसार भारत में तंबाकू सेवन प्रारंभ करने की औसत आयु 18.7 वर्ष है। महिलाओं की तुलना में पुरुष कम उम्र में तंबाकू का सेवन करना प्रारंभ कर देते हैं।

आज अधिकांश बीमारियों के पीछे तंबाकू की लत एक बड़ी वजह है। तंबाकू के कारण 25 तरह की बीमारियां तथा लगभग 40 तरह के कैंसर हो सकते हैं, जिसमें प्रमुख हैं- मुंह, गले, फेफड़े, प्रोस्टेट, पेट और ब्रेन का कैंसर। हमारे देश में लगभग 12 करोड़ लोग धूमपान करते हैं। विकसित देशों में धूमपान के विषय में जागरूकता के परिणाम स्वरूप धूमपान का औसत गिरता जा रहा है, लेकिन विकासशील देशों में अभी भी धूमपान के संबंध में चेतना की कमी है। इस वर्ष के विश्व तंबाकू निषेध दिवस (31 मई) की थीम 'तंबाकू छोड़ने का प्रण है।'

पूरी तरह से किया जाए प्रतिबंधित: तंबाकू व्यापार और उपभोग पर लेश मात्र भी अंकुश नहीं लग पाया। तंबाकू के धुएं से 500 हानिकारक गैसें एवं 7000 अन्य रासायनिक पदार्थ निकलते है, जिनमें निकोटीन और टार प्रमुख हैं। धूमपान में 70 रासायनिक पदार्थ कैंसरकारी पाए गये हैं। सिगरेट की तुलना में बीड़ी पीना ज्यादा नुकसानदायक होता है। हमारे देश में महिलाओं की अपेक्षा पुरुष अधिक धूमपान करते हैं। जब कोई धूमपान करता है तो बीड़ी या सिगरेट का धुआं पीने वाले के फेफड़ों में 30

फीसद जाता है और आसपास के वातावरण में 70 फीसद रह जाता है, जिससे परिवार के लोग और उसके मित्र भी प्रभावित होते हैं, जिसको हम परोक्ष धूमपान कहते हैं।

एक साथ कई बीमारियों को दावत: विश्वभर में होने वाली मृत्यु में 50 प्रतिशत मौतों का कारण धूमपान है। धूमपान के परिणामस्वरूप रक्त का संचरण प्रभावित हो जाता है, ब्लड प्रेशर की समस्या होती है, सांस फूलने लगती है और नित्य क्रियाओं में भी अवरोध आने लगता है। धूमपान से होने वाली प्रमुख बीमारियां हैं: ब्रांकाइटिस, एसिडिटी, टीबी, ब्लडप्रेशर, हार्ट अटैक, फॉलिज, नपुंसकता, माइग्रेन, सिरदर्द, बालों का जल्दी सफेद होना आदि। यदि महिलाएं गर्भावस्था के दौरान परोक्ष या अपरोक्ष रूप से धूमपान करती हैं तो उनके होने वाले नवजात शिशु का वजन कम होना, गर्भाशय में ही या पैदा होने के बाद मृत्यु हो जाना व पैदाइशी बीमारियां होने का खतरा बढ़ जाता है।

कोरोना संक्रमितों को ज्यादा खतरा: दुनिया में कोरोना संक्रमित व्यक्तियों की कुल संख्या लगभग 17 करोड़ पहुंच चुकी है, जबकि इससे मरने वालों की संख्या 34 लाख से अधिक हो चुकी है। यह वैश्विक आपदा 21वीं सदी की अब तक की सबसे बड़ी आपदा साबित हुई है। इसने लगभग 100 साल पहले हुई एक बड़ी आपदा स्पैनिश फ्लू की याद दिला दी है, जिससे पूरी दुनिया में लगभग पांच करोड़ लोगों की मौत हुई थी और भारत में लगभग दो करोड़ लोगों की मौत हुई थी। भारत में भी कोरोना ने अपना विकराल रूप धारण किया हुआ है। अब तक ढाई करोड़ से अधिक लोग कोरोना संक्रमित हो चुके है तथा लगभग तीन लाख लोगों की मृत्यु हो चुकी है। ज्ञात रहे कि कोरोना मानव शरीर की कोशिकाओं में एसीई-2 रिसेप्टर्स के माध्यम से प्रवेश करता है। धूमपान न करने वालों की तुलना में धूमपान करने वालों के फेफड़ों में एसीई-2 की संभावना ज्यादा पाई जाती है, जिससे इन व्यक्तियों को कोरोना संक्रमण का खतरा ज्यादा बढ़ जाता है। इस प्रकार यह साफ है कि धूमपान करने वालों में एसीई-2 कोरोना संक्रमण के जोखिम को बढ़ा सकती है।

बढ़ जाती है संक्रमण के प्रसार की संभावना: तंबाकू का सेवन करने वाले व्यक्ति तंबाकू को बार-बार थूकते हैं, जिससे आसपास के लोगों में भी संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। इसी प्रकार बीड़ी, सिगरेट व अन्य धूमपान करने पर बार-बार हांथों से मुंह को छूना व मुंह से धुआं छोड़ने पर आसपास के लोगों में संक्रमण फैलने का खतरा अत्याधिक बढ़ जाता है। कोरोना महामारी के समय में तंबाकू व धूमपान को घर पर रहकर छोड़ने का पूर्ण प्रयास करें और कोरोना संक्रमण से बचें। कोरोना संक्रमण से सळ्रक्षित रहने के लिए एन-95 मास्क का प्रयोग करें, हाथों को समय-समय पर धुलते रहें व सैनिटाइज करते रहें साथ ही शारीरिक दूरी का पालन करें। सबसे ज्यादा जरूरी वैक्सीन है, जो आपके लिए सुरक्षा कवच है। इसलिए जैसे ही आपका नंबर आए वैक्सीन की दोनों डोज अवश्य लगवाएं।

10 लाख धूमपान करने वाले लोगों ने (एक्शन आन स्मोकिंग एंड हेल्थ (ऐश) संस्था की गणना के अनुसार) कोविड-19 के दौरान लगभग धूमपान बंद कर दिया और लगभग पांच लाख 50 हजार ने छोड़ने का प्रयास किया। करीब 24 लाख लोगों में सिगरेट पीने की दर पहले से कम पाई गई है। कहा जा सकता है कि कोविड-19 ने लोगों को धूमपान छुड़ाने के लिए एक अप्रत्याशित अवसर प्रदान किया है। तंबाकू का सेवन प्रत्येक व्यक्तिके लिए नुकसानदायक है। महामारी के दौर में इस घातक बीमारी से बचने के साथ-साथ धूमपान छोड़ने के लिए हमें इस आपदा को अवसर में बदलना होगा। इसके लिए अपने चिकित्सक से ऑनलाइन संपर्क कर सकते हैं। निकोटिन रेपलेस्मेंट थेरेपी की सहायता ले सकते है। धूमपान छोड़ने में सहायक मोबाइल एप्स का भी उपयोग करें।

कमाई कम नुकसान ज्यादा: तंबाकू के व्यवसाय में भारत काफी अग्रणी है। विश्वभर में तंबाकू के उत्पाद एंव उपयोग के संबंध में भारत दूसरे स्थान पर है। तंबाकू के दुष्प्रभावों को देखते हुए इसके उत्पादन तथा ब्रिकी दोनों पर रोक लगाना इससे बचने का एकमात्र उपाय है। हालांकि इसके लिए दो कुतर्क दिए जाते हैं कि तंबाकू उत्पाद से लगभग तीन करोड़ लोगों को रोजगार मिला हुआ है तथा इससे काफी राजस्व की प्राप्ति होती है। राजस्व की प्राप्ति एक मिथक ही है, क्योंकि वित्त मंत्रालय के 2015-2016 के आंकड़ों के अनुसार तंबाकू के उत्पादों से प्रतिवर्ष 31,000 करोड़ रूपये अर्जित होते हैं, जबकि हम 1,04,500 करोड़ रुपये तंबाकू के दुष्प्रभावों से हो रही प्रमुख बीमारियों पर ही खर्च कर देते हैं। जाहिर है कि तंबाकू से नुकसान कहीं अधिक है। इसीलिए इसे एक अभिशाप कहा जा सकता है। इसके उत्पादन, पैकिंग और बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगा देना चाहिए।

Vaccination (Hindustan: 20210531)

https://epaper.livehindustan.com/imageview_839849_111549214_4_1_31-05-2021_3_i_1_sf.html

एक हफ्ते में आधे से भी कम हुई टीकाकरण की रफ्तार

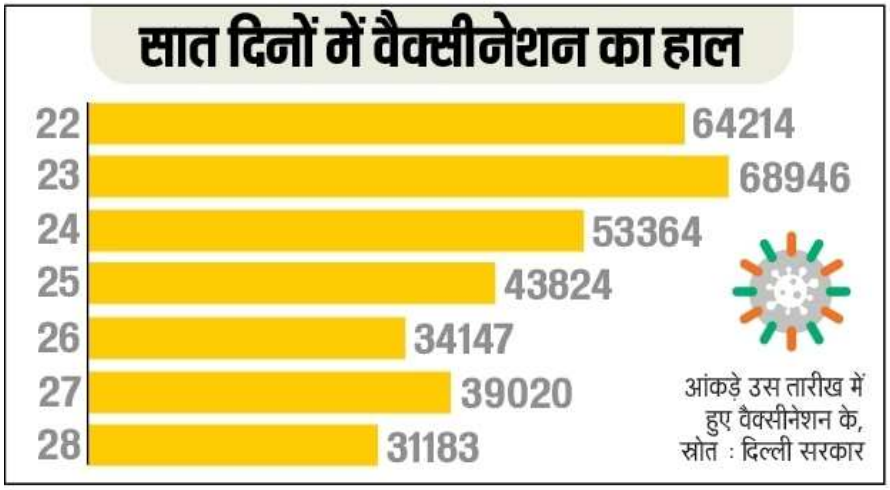

नई दिल्ली (व.सं.)। दिल्ली में कोरोना टीकाकरण लगातार घटता जा रहा है। बीते एक सप्ताह में टीकाकरण की रफ्तार लगभग 50 प्रतिशत तक कम हो गई है। बीते एक सप्ताह में टीकाकरण की संख्या भी 68000 से घटकर 31000 तक पहुंच गई है।

टीकाकरण केंद्रों की क्षमता के मुकाबले आधे से भी कम टीकाकरण हो पा रहा है। हालांकि, उम्मीद की जा रही है कि 10 जून से टीकाकरण की रफ्तार बढ़ सकेगी। दिल्ली सरकार को 10 जून से टीके की नई खुराक मिलने जा रही है। दिल्ली में टीकाकरण लगातार कम होता जा रहा है।

सरकारी केंद्रों में युवाओं के लिए टीकाकरण नहीं हो रहा है, तो 45 से अधिक उम्र वालों के लिए भी टीका केंद्रों की पूरी क्षमता का इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है। मौजूदा समय में सिर्फ 45+ वालों का ही टीकाकरण दिल्ली में किया जा रहा है।

Private hospitals cannot offer package for vaccination in collaboration with hotels: Health Ministry (The Hindu: 20210531)

https://www.thehindu.com/news/national/covid-19-private-hospitals-cannot-offer-package-for-vaccination-in-collaboration-with-hotels-health-ministry/article34681008.ece?homepage=true

It has written to the States and Union Territories to take necessary legal and administrative actions against such institutions.

The Centre has written to the States and Union Territories to initiate legal or administrative action against institutions offering package for COVID-19 vaccination in collaboration with hotels.

Private hospitals could not offer package for vaccination in collaboration with some hotels, the Health Ministry said on Saturday, adding that this was in violation of prescribed guidelines.

In its letter, the Central government said that it had come to the notice of the Health Ministry that some private hospitals were giving package for vaccination in collaboration with some hotels, which was against the guidelines issued for the National COVID-19 Vaccination Programme.

It added that apart from government and private vaccination centres, workplace, near home COVID-19 vaccination centre for elderly and differently-abled persons to be organised at group housing societies, there were no other avenues to carry out vaccination under the national COVID-19 Vaccination Programme. So vaccination carried out in star hotels was contrary to the guidelines and must be stopped immediately.

“Necessary legal and administrative actions should be initiated against such institutions. Therefore, you are also requested to monitor and ensure that National COVID-19 vaccination drive is carried out as per the prescribed guidelines,” the letter said.

Aggressive vaccination key to combating COVID waves: doctors (The Hindu: 20210531)

https://www.thehindu.com/news/national/aggressive-vaccination-key-to-combating-covid-waves-doctors/article34682931.ece?homepage=true

The warning comes even as India has so far managed to vaccinate just over 21.20 crore of its population. Centre to make 6 crore doses available directly for priority groups in June

An aggressive, liberalised vaccination program is key to preventing another surge of COVID-19, say health experts, warning that pandemics often persist for years presenting in-surges.

"We have to accept that COVID is here to stay and that we have to work at long-term management of the virus," say doctors.

The warning comes even as India has so far managed to vaccinate just over 21.20 crore of its population (including those that have got the first dose and those with two shots) till Sunday morning.

The Health Ministry on Sunday announced that to hasten the vaccination drive, nearly 12 crore vaccine doses will be made available for June.

Giving the break-up Health Ministry said that for June, 6.09 crore doses will be supplied for vaccination of priority group of Health Care Workers (HCWs), Front-Line Workers (FLWs) and persons aged above 45 years as free supply from the Centre. In addition, more than 5.86 crore doses will be available for direct procurement. For May, 4.03 crore doses were made available by to States, free of cost, in addition to 3.90 crore doses for direct procurement.

'Persisting pandemics'

Meanwhile, doctors stating that liberalised vaccination, making masks mandatory, following strict norms of social distancing are vital to prevent another surge said, "pandemics often persist for years."

Sanjeev Bagai, Chairman of Nephron Clinic adds that it is also important to protect the vulnerable and immune-compromised, and make health insurance mandatory. "Public awareness on prevention is vital," he said.

Puneet Nigam, senior vice-president, medical services at Metropolis Healthcare Ltd. said that creating the right infrastructure, making available equipment, consumables, drugs is key in the preparation of another surge. "Tele-consultation, to the needy can reduce load on hospitals and only moderately or severely sick should be hospitalised," he said.

'Highly mutagenic'

Cautioning that a third wave is likely, Monalisa Sahu, consultant, Infectious Diseases,Yashoda Hospitals, Hyderabad said the possibility of a third wave of COVID is high because the virus is highly mutagenic in nature.

“Elders in the family should follow strict COVID appropriate behaviour and get vaccinated at the earliest. As no vaccine in India is approved for children, it makes them more vulnerable to contracting the infection from their family members. The third wave can be prevented to a great extent by observing COVID appropriate behaviour, even months after we get over the second wave. Achieving a good level of herd immunity by adequately vaccinating a majority of the population can serve as a game-changer,” Dr. Sahu said.

Speaking about the possible vulnerability of children during the third wave Lokesh Mahajan, HOD, Pediatrics, QRG Hospital in Faridabad explained that with many mutant strains emerging, it is necessary to follow all protocols and take precautions to keep children safe.

“In the first wave, less than 1% of the children were infected but in the second wave, the infection rate among children increased up to 10%. Hence we have to work on keeping our children safe by following COVID appropriate behaviour and boosting their immunity. Train your children to follow good hygiene practices and don’t send them outside if they have a fever or any other illness.”

“People have to accept and understand COVID 19 is here to stay in our lives,’’ added Vikas Maurya, Director, Pulmonology at Fortis Hospital, Shalimar Bagh. He said that vaccinating people, encouraging all to stay away from crowds, testing-isolating-treating, building hospital infrastructure and providing robust surveillance is the way forward.

ब्लैक फंगस

हरियाणा में मिले ब्लैक फंगस के दो अलग वेरियंट, लक्षण और इलाज भी अलग (Dainik Jagan: 20210531)

https://www.jagran.com/haryana/hisar-two-different-variants-of-black-fungus-in-haryana-and-symptoms-and-treatment-different-21693680.html?itm_source=website&itm_medium=homepage&itm_campaign=p1_component

हरियाणा मेंे ब्लैक फंगस लगातार फैल रहा है और लाेगों को अपनी चपेट में ले रहा है। राज्य में इस खतरनाक बीमारी के दो वेरियंट मिले हैं। इन दोनों वेरियंट के लक्षण भी अलग हैं और इलाज भी अलग है।

हिसार, [चेतन सिंह]। हरियाणा में ब्लैक फंगस के दो वरियंट मिले हैं। इनके लक्षण और इलाज भी अलग होते हैं। हिसार के अग्रोहा स्थित महाराज अग्रेसन मेडिकल कालेज की लैब में ब्लैक फंगस की दो अलग-अलग तरह के वेरियंट का पता लगाया है। इनका व्यवहार और उपचार दोनों अलग-अलग है। ब्लैक फंगस के ये वेरियंट दो अलग-अलग असपरजिलोसिस और न्यूकोरमाइकोसिस हैं। असपरजिलोसिस के केस मुंबई में मिल चुके हैं। अब अग्रोहा मेडिकल कॉलेज में इसके चार केस मिले हैं।

असपरजिलोसिस और न्यूकोरमाइकोसिस दो प्रकार के होते हैं फंगस

खास बात यह है कि असपरजिलोसिस फंगस काफी सुस्त होता है। इसके बढ़ने की प्रक्रिया अलग है, मगर यह न्यूकोरमाइकोसिस की तरह ही दिमाग को नुकसान पहुंचा सकता है। असपरजिलोसिस फंगस में अलग तरह की दवाओं व इंजेक्शन का प्रयोग होता है जो मार्केट में मौजूद है। इसकी कोई कमी नहीं है। न्यूकोरमाइकोसिस फंगस की दवाओं और इंजेक्शन दोनों की भारी कमी है। अभी तक मेडिकल कॉलेज में सभी केसों को न्यूकोरमाइकोसिस फंगस मानकर ही उपचार दिया जा रहा था मगर अब दोनों प्रजातियों की पहचान कर उपचार दिया जा रहा है।

इस तरह हमला करती है ब्लैक फंगस

ब्लैक फंगस दरअसल हमारी नाक में प्रवेश कर साइनिस को ब्लॉक कर देती है। यह फंगस जिस नस को ब्लॉक करती है उसके टिश्यू तक खून पहुंचना रूक जाता है और वह भाग काला पड़ जाता है। यह फंगस मनुष्य के दिमाग तक भी पहुंच सकता है। अग्रोहा में भी ऐसे केस आए हैं जिसमें यह फंगस दिमाग तक पहुंचकर उसे नुकसान पहुंचा चुका है।

चार स्टेज में फैलता है ब्लैक फंगस

पहली स्टेज : नाक संबंधी लक्षण मरीज में आते हैं जैसे नाक बंद हो जाना, खून का आ जाना।

दूसरी स्टेज : साइनिस ब्लॉक हो जाती है इससे नाक के आसापास और चेहरे पर सूनापन आ जाता है।

तीसरी स्टेज : आंख का पिछला हिस्से में यह फंगस फैल जाता है। आंख काली पड़ने लगती है।

चौथी स्टेज : फंगस ब्रेन में चले जाते हैं और उसे खोखला कर देते हैं।

ब्लैक फंगस के दो अलग-अलग वेरियंट है जिनका अलग-अलग उपचार है। पहचान होने से उपचार में आसानी होती है। अभी हमारे यहां चार ऐसे केस आ चुके हैं।

Health workers

Don’t ignore our young healthcare workers (The Indian Express: 20210531)

https://indianexpress.com/article/opinion/columns/healthcare-worker-hierarchy-professional-training-covid-pandemic-7337174/

While grappling with the deficiencies of the medical system, we must also pay attention to the needs of the most vulnerable members of the care-giving team.

Even before the pandemic, it was common in most public hospitals to have duty hour restrictions flouted, with sleep-deprived postgraduates working 100-hour weeks.

Medical interns and postgraduates have traditionally occupied the lowest rungs in the hierarchy of training. From an academic standpoint, this seems fair and in congruence with any professional training pathway. Unfortunately, decades of exploitation of this structure have resulted in a system that is indifferent at best and malignant at worst for our young trainees.

The common citizen today has been jolted awake to the systemic deficiencies in our healthcare systems. While grappling with these, it is also important to shed light upon the struggles of the most vulnerable members of the care giving team. These include young medical interns, postgraduates, nurses, physiotherapists, pharmacists and other allied health workers.

Even before the pandemic, it was common in most public hospitals to have duty hour restrictions flouted, with sleep-deprived postgraduates working 100-hour weeks. Moreover, the stipends are erratic, with states like Tamil Nadu and Himachal Pradesh awarding some of the lowest monthly stipends to first-year residents at Rs 35-37,000.

During the pandemic, as we hailed healthcare workers as warriors, a deaf ear was turned to the basic necessities needed in this “war”. With the mounting number of cases, most public hospitals had young interns, postgraduates, nurses and technicians staff fever clinics, wards and ICUs. They were overburdened by the massive volume of patients. Managing complex ventilator settings and drug interactions in a patient with multiple co-morbidities in the Covid ward requires tremendous cognitive effort. Add to that the physical distress of being on one’s feet for 8-12 hours in a stuffy PPE suit and tightly-fitted face mask, all the while unable to take a toilet break.

As the second wave hit, hospitals increased their beds and ICU capacity. One question remained: Would things be different this time for our “healthcare heroes”? The answer, unfortunately, remains no. The surge has stretched our healthcare workers thin. And the burden has been compounded by poorly-informed public health measures and an overall

increase in public frustration and indifference. With the delay in the NEET postgraduate exams this year, the shortage of personnel will continue to overburden them.

The increasing amount of disinformation on social media fuelling distrust against doctors and nurses has left most trainees in a hapless position. On the one hand, they have to defend the merit and rigour of scientific evidence that informs medical practice. On the other hand, they have to defend themselves against the several instances of violence and abuse by patient attendees.

Perhaps most heartbreaking has been the toll on the well being of young trainees. Being away from family while simultaneously worrying about their safety amidst a global pandemic affects their mental health. Across the country, suicide has claimed the lives of students, interns and postgraduates in the past year. Triggered by the stress of relentless duty hours (some even suffering from severe conditions themselves,) their deaths are now a statistic that disproportionately affects healthcare workers to begin with.

As we re-evaluate the state of healthcare in our country, it is time we bring an end to our apathy towards healthcare workers. Amendments to the Epidemic Disease Act to protect frontline workers from violence and centrally-sponsored insurance schemes are welcome. Citizens must now speak out against the exploitation of our young trainees. It is our moral responsibility to end this toxic culture that feeds off public apathy.

After all tomorrow, it might be your children or siblings that take up this noble profession. And we want to be a country that celebrates their sacrifices not only in gesture, but also in action.

Aspergillosis

Aspergillosis: Symptoms and treatment of the new fungal infection developed after coronavirus recovery (The Times of India: 20210531)

https://timesofindia.indiatimes.com/life-style/health-fitness/health-news/aspergillosis-fungal-infection-symptoms-treatment-causes-and-prevention-of-the-new-fungal-infection-developed-after-coronavirus-recovery/photostory/83056960.cms

After black, white and yellow fungus, the threat of a new type of fungal infection called aspergillosis has stirred fear among recovered COVID-19 patients. 8 cases of nasal aspergillosis, which infects the sinuses, have been reported from two of the government

hospitals in Vadodara, Gujarat over the past week. Like black fungus, aspergillosis is also predominantly seen in COVID-19 cases or those who have recently recovered from the disease. The growing cases of fungal infections may be attributed to the usage of steroids for treating severe coronavirus infection as well as the use of non-sterile water for hydrating the oxygen supply.

02/9What is aspergillosis?

Aspergillosis is an infection caused by a type of mould or fungus called Aspergillus. This fungus is commonly found in the environment but does not lead to any kind of infection in a healthy individual. However, when a person with compromised immunity or lung infection breathes the spores they may develop allergic reactions and lung infections due to it. In severe cases, it can even spread to blood vessels and beyond. The symptoms of this new fungal infection depend on the type of aspergillosis a person is infected with. Different types of aspergillosis affect the body in different ways. Here are some common types and symptoms of this fungal infection.

03/9Fever and chills

Fever and chills are the initial symptoms of coronavirus, which lasts for 4-5 days in mild cases. When treating COVID-19, doctors first try to control fever. If your fever returns post-infection then it could be due to the fungal infection.

04/9Shortness of breath

When the fungus spreads to the lungs, it may start damaging the tissues, making it difficult to breathe properly. Feeling breathless or out of breath can indicate that the fungus has spread to the lungs.

05/9Coughing with blood

If the infection precedes the lungs, an infected person may have to deal with persistent coughing. In some cases, they may also cough up small amounts of blood.

06/9Headaches or eye symptoms

The mould enters the body through the nose. It primarily affects the sinus, lungs and then moves towards the brain. This may cause headache and eye irritation or pain.

07/9Fatigue

A low-functioning immune system may itself make you feel tired. Along with that if you are infected with the fungus then you may experience chronic fatigue syndrome. Even performing a simple everyday task would be difficult for you.

08/9Skin lesions

Fungal infection can also spread on the skin leading to irritation, redness, swelling, blister and itching.

09/9Diagnosis and Treatment

Diagnosis of an aspergilloma or invasive aspergillosis can be difficult as the symptoms mimic other kinds of lung infection. This fungus is commonly found in all environments but difficult to distinguish from certain other moulds under the microscope. Doctors may generally prescribe a biopsy to sample and test lung tissue. Other tests may involve blood tests to test the fungus molecules, a chest X-ray, a CT scan of the lungs and a sputum stain and culture to examine the bronchial mucus.

If detected at the early stage, the infection can be easily treated with the help of medications. As per an expert, the treatment for aspergillosis is the same as black and white fungus. But if the infection spreads to the other parts of the body, surgery is the only option available.